International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पंडित ब्रह्मदत्त वाग्ग्मि का शास्त्रीय–पांडित्य का विश्लेषण

डॉ. जोगिन्द्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय, हाँसी

शोधसारः

पंडित ब्रह्मदत्त वाग्मि की जीवनीः आदिकाल से ही विभिन्न कालखण्डों में कई विभूतियों ने जन्म लेकर इस धरती को अपने साहित्यिक संग्रह से भरपूर किया है। क्योंकि यह पूरे ब्रह्माण्ड की नटी है वेदों से लेकर आज तक बहुत से साहित्यकारों ने माँ सरस्वती को अपने लेखों में प्रशंसा की है। उनमें धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक विशेषताएं दिखाई देती रही हैं। उन्हीं में से एक आचार्य ब्रह्मदत्त वाग्ग्मी का जन्म 19 दिसंबर 1916 ई. में गुड़गांव के कुशाल चन्द के घर 'घामडौज' में हुआ था। गुड़गांव से बारह किलोमीटर की दूरी पर घामडौज ग्राम है, जो अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ सोहना रोड़ पर है।

''जातस्तदा प्रस्तुत घामडौजे द्विजान्वये संस्तुत भावसारः।[1]
नाना जनानां ह्रदये निगूढः स ब्रह्मदत्तो गुरुवर्य एषः।।''

इनके पिता पण्डित कुशाल चन्द ब्राह्मण थे। वे शिक्षित एवं सभ्य थे। उनका व्यक्तित्व आदर्शों से युक्त था। इसलिए इनके जीवन की झलक इनके जीवन में प्रतिबिम्बित होती है। आप अपने जीवन के प्रारम्भिक समय में ढाई वर्ष की अल्पायु म अनाथ हो गये थे। इस कारण इनका जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था। इनकी माता रामकौर देवी ने ही इनका पालन पोषण किया था।

बीज शब्दः अनिवार्यता, धर्मशास्त्र, महाकवि, अभूतपूर्व, अभिन्नता, पारिभाषिक, कविता–कामिनी।

कृतियाँ–

महाकवि ब्रह्मदत्त वाग्ग्मि संस्कृत जगत् के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। इन्हें कविता–कामिनी का विलास कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। संस्कृत में अनेक काव्य–ग्रन्थों की रचना करके संस्कृत साहित्य के भण्डार में अभूतपूर्व श्रीवृद्धि की है। इन्होंने संस्कृत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जगत् को पाँच काव्य–ग्रन्थ समर्पित किये हैं। इन काव्यों के नाम इस प्रकार हैं– 'पार्थचरितामृत' (महाकाव्य), 'अद्भुतपञ्चता' (महाकाव्य), 'श्रीस्तवराज', 'शुकशोकान्त', 'समष्टिसिद्धि' (काव्य) आदि।

महाकवि ब्रह्मदत्त वाग्मि उच्चकोटि के महाकवि हैं। उनकी रचनाओं में नाना प्रकार का ज्ञान विद्यमान है। महाकवि अनेक शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित रहे हैं। वे ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, दर्शन, काव्यशास्त्र आदि में आचार्य थे। इसलिये उनके ग्रन्थों में इनकी छाप पड़ना भी स्वाभाविक था। वेद सभी विद्याओं में सबसे प्रथम वेद आते हैं। महाकवि ने अपने ग्रंथों में अनेक वेदों की चर्चा की है और वे वेदों को प्रमाण मानते हैं। किसी बात की पुष्टि करते हैं तो वेदों को प्रथम स्वीकार करते हैं। 'पार्थचरितामृत महाकाव्य ' के सप्तम रत्न में युधिष्ठिर के कथन में स्पष्ट तौर से वेदों को महत्त्व दिया गया है। वह कहता है कि हर तथ्य का प्रमाण वेदों से ही सिद्ध होता है।

"अतः पुरोक्ताः श्रुतयः प्रसिद्धाः प्रसाधयन्त्येव सुयुक्तिमेताम् यत्सत्यमेव जयतेनानृतम्।''[2]

'पार्थचरितामृत महाकाव्य' क रत्न सात में कवि ने ब्रह्मा को ही सकल संसार का स्रष्टा है जो जीवों की रचना विभिन्न कालखंडों में करता है ।

विधे, कथं भिन्ननिसर्गलोकाः विभिन्नकाले विषये न सृष्टा।[3]

महाकवि ब्रह्मदत्त वाग्मि व्याकरण शास्त्र में भी सिद्धहस्त थे। यह उनके काव्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है। उन्होंने काव्यों में अनेक व्याकरण के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है। अपवाद एवं आदेशादि शब्दों का उल्लेख उनकी कृतियों में उपलब्ध होता है। उन्होंने अनेक स्थानों पर व्याकरण के सूक्ष्म विधानों का प्रयोग किया है। 'यियासु' शब्द में सन्नन्त रूप दर्शाया है। इसी प्रकार 'निगमिषु' आदि रूप देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार इन्होंने नामधातु एवं अनेक प्रक्रियाओं के रूप प्रदर्शित किए हैं। इन्होंने विशेष वैयाकरणों द्वारा प्रयुक्त व्यतीयुः, व्यजायत, सन्दधौ इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया है। इन्होंने द्विवाचक शब्द उभय शब्द का ही प्रयोग किया है उभ का नहीं–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 4, April- 2024
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

एकः पश्यति तां तथा तदपरः प्रेमी तथा वीक्षते।[4]

तादात्म्यं खलु संगतं तदुभयोरूपं द्वयोः सन्निभम् ।।

यहाँ इन्होंने व्याकरण के नियम का पालन किया है। इस प्रकार इन्होंने अपने व्याकरण सम्बन्धित सूक्ष्म ज्ञान का परिचय दिया है। इनकी रचनाओं में उनके धातु सम्बन्धित ज्ञान का पता लगता है।

काव्यशास्त्र के अनुसार काव्य में शब्द और अर्थ दोनों की अनिवार्यता आवश्यक है। एक दूसरे के बिना ये नहीं रह सकते हैं। यथा– "शब्दार्थौ काव्यवाचको वाच्यश्चेति द्वौ सम्मिलितौ काव्यम्"।[5] दोनों ही काव्य के लिए अपना महत्त्व रखते हैं इसी तथ्य की पुष्टि आचार्य भामह करते हैं "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"[6]।

महाकवि ब्रह्मदत्त वाग्मि ने भी इसी प्रकार शब्द और अर्थ दोनों की अभिन्नता स्वीकार की है। कवि ने अपनी कृति पार्थचरितामृतम् में मनोभावों की चर्चा करते हुए कहा है कि मनोभाव स्थायी नहीं रहते –

"न चौवं रसाः स्थायिनः सन्ति शाश्वत् इति प्रेरको जागरूकस्तथात्वे।[7]

कदाचित्क्षणं विप्रयोगे रुदन्ति, कदाचिच्च तद्भावना पाचयन्ति ।।"

भाव स्थाई नहीं रहते, कभी प्रकट होते हैं तो कभी लुप्त हो जाते हैं। इस से ज्ञात होता है कि कवि रसों के विषय में जागरूक हैं। उन्होंने अनेकत्र नाना रसों का निरूपण किया है। ये स्थाई भावों की भी चर्चा करते हैं। इन्होंने ग्याहरवें रत्न में भगवान् कृष्ण से अर्जुन को कहलवाते हुए हर्ष और शोक स्थाई भावों की चर्चा की है– "हर्षाहर्षावुभयपरकौ पार्थ, ध्यानं गतौ स्तः।"[8]

यहा रसों का वर्णन करते हुए करुण, रौद्र और वीर रस की अभिव्यक्ति की है। तृतीय रत्न में एकलव्य और अर्जुन के संवाद में करुण रस का निरूपण हुआ है। अर्जुन एकलव्य से कहते हैं कि करुण रस पूर्ण मनुष्य का यही परिणाम होता है दृ "करुणरसरुतानामीदृशो वा विपाकः ।।"[9]

नवम रत्न में रौद्ररस का सुस्पष्ट उल्लेख देखा जा सकता है। भगवान् कृष्ण अर्जुन को युद्ध के लिये प्रेरित करते हुए कहते हैं कि रौद्ररस से रौद्ररस खेलना ही उचित बतलाते

हैं

"रौद्रे रौद्ररसस्य संविरचनं युक्तं सदा शोभते।''[10]

ब्रह्मदत्त वाग्गिम धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्होंने धर्मशास्त्र का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है। वे लिखते हैं कि पाण्डवों ने धर्मशास्त्र से निश्चय करके तप का प्रभाव जाना है। इसलिये ये पहले वासुदेव का पूजन करके देहावसान करेंगे।

"विनिश्चितस्तैरिति धर्मशास्त्रात् अघाऽपहाराय तपः प्रभावः।"[11]

कवि विविध स्मृतियों से सुपरिचित थे। यह उनके काव्यों अवगत होता है। 'मनुस्मृति' धर्मग्रन्थों में अन्यतम है जिस ग्रन्थ में मनु ने राजा के लिये मदिरापान, द्यूतक्रीडा और शिकार आदि को व्यसन बताया है।

कवि ने भी इनकी निन्दा की है। वे कहते हैं कि नीच कर्मों का बुरा परिणाम बहुत शीघ्र ही मिल जाता है। यहाँ कवि ने इंगित किया है कि नीचतम का दो दिन में, उससे कम का सात दिन में और उससे कम का मास में, उससे कम का एक वर्ष में परिणाम मिल जाता है

"द्विघस्रसप्तमासवर्षमुत्तरोत्तरं क्रमात्। [12]

जघन्यकर्मणां निदानमाशु नाशकं भवेत्।।"

नीतिशास्त्र व्यवहारपरक होता है। इसमें मनुष्य के जीवन की व्यावहारिक बातों का समावेश होता है । वाग्ग्मी व्यवहार कुशल थे। उनके काव्य में व्यावहारिक बातें विस्तृत रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। यहाँ कवि ने उल्लेख किया है कि जहाँ दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे हों, वहाँ तीसरे को बीच में नहीं बोलना चाहिए। यह मूढता होती है–

"यद्यप्यस्थि, विमूढतैव पतनं मध्ये द्वयोर्भाषणे।"[13]

ब्रह्मदत्त वाग्गिम को आयुर्वेद शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान था। यह उनके ग्रन्थों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है। उनका एक 'अद्भुतपञ्चता काव्य' तो सम्पूर्ण ही आयुर्वेद से सम्बद्ध है। पार्थचरितामृत में भी यत्र–तत्र आयुर्वेद की चर्चा हुई है। पञ्चम रत्न में आयुर्वेदिक क्वाथ की चर्चा की है और कहा है कि क्वाथ में मीठा भी कडवा हो जाता है –

"क्वाथं समेत्य मधुरं कटुतां प्रयाति" [14]

पार्थचरितामृत के नवम रत्न में कहा है कि विष से उत्पन्न रोग विष से ही शान्त होता है। वैद्य लोग अन्य औषध का प्रयोग वहाँ नहीं करते शुद्ध विष काम में लाते हैं–

"वैषेणैव हि भेषजेन विषजो रोगो द्रुतं शाम्यति ।।[15]

नान्यत्तच्छमनाय वैद्यमतयो ध्यायन्ति संजीवनम् ।"

कवि समाज की प्रवृत्तियों के विषय में भी अवगत है। वह सामाजिक कर्तव्यों के विषय में गहरा ज्ञान रखता है। कवि कहता है कि अधिकार और धन के कारण लोग प्रायः अभिमानी हो जाते हैं और मनमानी करने लगते हैं, जिसका ज्वलन्त उदाहरण दुर्योधन है। इससे समाज में उच्छृङ्खलता आ जाती है और समाज पथभ्रष्ट हो जाता है।

"कुटिलगतिनिसर्गा दानवा मानवेषु कुपथचलननीतिं सश्रमं पातयन्ति।" [16]

निष्कर्ष : इनके द्वारा रचित शास्त्रों के विवेचन से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि महाकवि ब्रह्मदत्त वाग्मि वास्तव में ही नानाशास्त्रविद थे। अतः उनकी दृष्टि से शास्त्र एवं कलादि कोई पक्ष अछूता नहीं है। उनकी कृतियों में सभी पक्षों को यथास्थान प्रतिनिधित्व मिला है। यहाँ केवल प्रतिनिधित्व के रूप में कुछ ही उदाहरण प्रस्तुत किये हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. डॉ० हरि सिंह शास्त्री निम्बार्कावस्थानम्, पृष्ठ 23 मम
2. पार्थचरितामृतम् 7/40
3. वही, 7/17
4. वही, 9/29
5. वही, 1/7
6. भामह–काव्यादर्श 1/6
7. पार्थचरितामृतम् 13/38
8. वही,11/5
9. वही, 3/58

10. वही, 9/17
11. वही, 17/46
12. वही, 10/24
13. वही, 9/9
14. वही, 5/40
15. वही,9/17
16. वही,6/44